CEDSI TIMES

Your Skilling Partner...

छत्तीसगढ़ ने मवेशी स्वास्थ्य देखभाल को बढ़ाने के लिए मोबाइल पशु चिकित्सा वाहन पेश किया

सफल हाट-बाजार क्लिनिक योजना से प्रेरित होकर, छत्तीसगढ़ पशु स्वास्थ्य देखभाल को बढ़ाने और डेयरी उद्योग को बढ़ावा देने के लिए मोबाइल पशु चिकित्सा वाहन लॉन्च कर रहा है। ये वाहन गौठानों (गाय आश्रयों) का दौरा करेंगे, मवेशियों को सुविधाजनक चिकित्सा देखभाल प्रदान करेंगे और ग्रामीणों को लाभान्वित करेंगे। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल की गौपालन के प्रति प्रतिबद्धता और गोधन न्याय योजना से दुग्ध उत्पादन में 50 हजार लीटर की उल्लेखनीय वृद्धि हो चुकी है। वह राज्य की योजनाओं का उपयोग करके डेयरी क्षेत्र को मजबूत करने के लिए सर्व यादव समाज (समुदाय) की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं।

राज्य कृषि और पशुपालन को भी बढ़ावा देता है, गौठानों को ग्रामीण औद्योगिक पार्कों में बदलता है, महिलाओं और युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करता है। 36 आईटीआई को अपग्रेड करने के लिए टाटा टेक्नोलॉजीज के साथ सरकार की साझेदारी युवाओं को आधुनिक कौशल और विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर रोजगार संभावनाओं से लैस करेगी। इस पहल का उद्देश्य मवेशियों की भलाई सुनिश्चित करना और राज्य भर में डेयरी उद्योग में किसानों और हितधारकों की आजीविका का उत्थान करना है।

कृषि विज्ञान केंद्र फतेहगढ़ साहिब पीएम किसान योजना वेबकास्टिंग के माध्यम से किसानों को सशक्त बनाता है

कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) ने किसानों को सशक्त बनाने और भूमिधारक परिवारों का समर्थन करने के उद्देश्य से पीएम किसान योजना की लाइव वेबकास्टिंग का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में प्रधान मंत्री ने किसान परिवारों को प्रत्यक्ष आय सहायता प्रदान करने वाली योजना की 14वीं किस्त का अनावरण किया। 100 किसानों और कृषक महिलाओं की उत्साहपूर्ण भागीदारी ने कार्यक्रम की सफलता को चिह्नित किया।

तकनीकी सत्रों के दौरान, केवीके वैज्ञानिकों ने धान की फसलों में कीट प्रबंधन और प्रभावी खरपतवार प्रबंधन पर बहुमूल्य मार्गदर्शन दिया। इसके अतिरिक्त, बरसात के मौसम के दौरान बागवानी फसलों की देखभाल और सुरक्षित पेयजल और जल-जनित बीमारियों की रोकथाम के उपायों पर भी चर्चा की गई। डॉ. शिवा बमभोटा ने कृषि-प्रसंस्करण परिसरों के लिए सरकारी योजनाओं पर प्रकाश डाला, और डॉ. जीपीएस सेठी ने मानसून के दौरान डेयरी पशु टीकाकरण कार्यक्रम और देखभाल को संबोधित किया।

पूर्व प्रशिक्षुओं ने किसानों और कृषक महिलाओं को केवीके गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने और कृषि से संबंधित प्रौद्योगिकियों के बारे में सूचित रहने के लिए प्रेरित किया।

नाबार्ड का लक्ष्य किसानों को सशक्त बनाना और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देना है

विभिन्न जिलों में विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावी योजना और समान ऋण वितरण के लिए सटीक डेटा आवश्यक है। डॉ. मणि ने बैंकों से किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) ऋण योजना को बढ़ाने का भी आग्रह किया, जिससे डेयरी और मछली किसानों सहित सभी पीएम-किसान लाभार्थियों तक पहुंच सुनिश्चित हो सके। इसके अतिरिक्त, बैठक में किसानों के समर्थन के लिए जन सुरक्षा योजना को बढ़ावा देने और सहकारी बैंकों के विकास के लिए नई योजनाएं शुरू करने पर चर्चा हुई। सहयोगात्मक प्रयासों का उद्देश्य किसानों को सशक्त बनाना और राज्य में सतत ग्रामीण विकास को बढ़ावा देना है।

ग्रामीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम में, नाबार्ड ने रायपुर में एक संयुक्त बैठक आयोजित की, जिसमें छत्तीसगढ़ के सभी 33 जिलों के अग्रणी जिला प्रबंधकों (एलडीएम) और जिला विकास प्रबंधकों (डीडीएम) को एक साथ लाया गया। बैठक का प्राथमिक फोकस जमीनी स्तर पर ऋण प्रवाह को बढ़ाने पर था, जिसमें नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक डॉ. सियानेंद्र मणि ने सटीक डेटा रिपोर्टिंग पर जोर दिया।

डेयरी उद्योग में महिलाओं को सशक्त बनाना: W20 जनभागीदारी इवेंट चैंपियंस डेयरी सहकारी समितियों के माध्यम से महिलाओं के नेतृत्व वाले सतत विकास

श्री परषोत्तम रूपाला, जिन्होंने कार्यक्रम को वस्तुतः संबोधित किया, ने मूल्यवर्धित उत्पाद निर्माण में उनके योगदान को स्वीकार करते हुए डेयरी क्षेत्र में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि वर्तमान में 18 डेयरी सहकारी समितियां महिलाओं द्वारा संचालित हैं। श्रीमती एएचडी की सचिव अलका उपाध्याय ने श्वेत क्रांति में महिलाओं के महत्वपूर्ण योगदान की सराहना की, जहां डेयरी क्षेत्र के 70% कार्यबल में महिलाएं शामिल हैं। उन्होंने नई ए-हेल्प पहल पर भी प्रकाश डाला, जिसमें समुदाय-आधारित महिला कार्यकर्ता शामिल हैं जो स्थानीय पशु चिकित्सा सेवाओं और पशुधन मालिकों के बीच अंतर को पाटती हैं, प्राथमिक सेवाएं प्रदान करती हैं और वन हेल्थ अवधारणा को बढ़ावा देती हैं।

आनंद, गुजरात - आज़ादी का अमृत महोत्सव और W20 जनभागीदारी कार्यक्रम के बैनर तले, गुजरात के आनंद में "डेयरी सहकारी समितियों के माध्यम से महिलाओं के नेतृत्व वाले सतत विकास" विषय पर एक उल्लेखनीय सभा आयोजित की गई। सम्मानित अतिथियों, विशेषज्ञों और डेयरी क्षेत्र की महिला नेताओं ने इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया।

इस कार्यक्रम की शोभा सुश्री भारती घोष ने बढ़ाई, जिन्होंने कोविड-19 महामारी के दौरान महिलाओं द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता दी और इसका श्रेय देश में महिलाओं के लिए भारत सरकार की योजनाओं द्वारा बनाए गए सक्षम वातावरण और पारिस्थितिकी तंत्र को दिया। इस कार्यक्रम में भारत के विभिन्न राज्यों की महिला डेयरी किसानों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने W20 के प्रमुख प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में प्रेरक सफलता की कहानियाँ साझा कीं। गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन महासंघ के प्रबंध निदेशक श्री जयेन मेहता ने अमूल और भारत के डेयरी क्षेत्र में प्रगति और विकास पर प्रकाश डाला।

इस कार्यक्रम में आईडीएफ की महानिदेशक सुश्री कैरोलिन एमोंड और एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने वैश्विक डेयरी क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका और सहकारी समितियों में महिलाओं को बढ़ावा देने के लिए एनडीडीबी की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। एक दिवसीय कार्यक्रम में "सभी क्षेत्रों में महिला नेताओं के लचीलेपन की यात्रा" और "अंतःविषय सहयोग के माध्यम से सतत विकास में महिलाओं का योगदान" पर पैनल चर्चा हुई, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों की प्रेरक महिला नेता शामिल हुईं। अंत में, W20 की मुख्य समन्वयक सुश्री धरित्री पटनायक ने सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया और डेयरी क्षेत्र में महिलाओं के नेतृत्व वाले सतत विकास को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता दोहराई।

सलेम में दूध उत्पादकों ने सरकार से प्रोत्साहन के मानदंडों में ढील देने का आग्रह किया

तमिलनाडु के सेलम में दूध उत्पादकों ने सहकारी समितियों को दूध की आपूर्ति करने वाले किसानों को प्रति लीटर ₹1 प्रोत्साहन प्रदान करने के राज्य सरकार के फैसले की सराहना की है। हालांकि, वे सरकार से प्रोत्साहन योजना के मानदंडों में ढील देने पर विचार करने का आग्रह कर रहे हैं।

एम.जी. तमिलनाडु मिल्क प्रोड्यूसर्स वेलफेयर एसोसिएशन के महासचिव राजेंद्रन का सुझाव है कि सरकार को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए वसा और एसएनएफ को मिलाकर 12.5% कुल वसा प्रतिशत पर विचार करना चाहिए। यह दृष्टिकोण स्तनपान के दौरान स्वाभाविक रूप से होने वाले वसा और एसएनएफ स्तरों में भिन्नता से बचाएगा।

डेयरी विकास विभाग के अधिकारियों ने दूध उत्पादकों की मांगों को स्वीकार किया है और कहा है कि वे इस मामले को सरकार के ध्यान में लाएंगे. अब निर्णय सरकार पर निर्भर करता है कि वह मानदंडों में ढील देने की व्यवहार्यता का आकलन करे और यह सुनिश्चित करे कि प्रोत्साहनों का डेयरी फार्मिंग समुदाय के एक बड़े हिस्से पर सकारात्मक प्रभाव पड़े।

25 जुलाई को दुग्ध उत्पादन और डेयरी विकास आयुक्त द्वारा जारी एक परिपत्र के अनुसार, किसानों को उनके द्वारा उपलब्ध कराए जाने वाले दूध की गुणवत्ता के आधार पर प्रोत्साहन दिया जाएगा। पात्र दूध में 4.3% वसा और 8.2% ठोस गैर-वसा (एसएनएफ) होना चाहिए, जो कुल 12.5% है। पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए दूध परीक्षण और स्पॉट पावती के साथ मासिक आधार पर किसानों के खातों में प्रोत्साहन राशि वितरित की जाएगी।

आईवीआरआई ने दूध की पैदावार में अभूतपूर्व वृद्धि के लिए अभूतपूर्व पशु आहार का अनावरण किया

एक ऐतिहासिक विकास में, जो डेयरी उद्योग में क्रांति लाने के लिए तैयार है, आईसीएआर-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आईवीआरआई) ने दूध उत्पादन को फिर से परिभाषित करने के लिए एक अभूतपूर्व नवाचार पेश किया है। यह अग्रणी प्रगति एक क्रांतिकारी पशु आहार के रूप में आती है जो समय-परीक्षणित औषधीय पौधों से प्राप्त फाइटोन्यूट्रिएंट्स से सावधानीपूर्वक समृद्ध है। फ़ीड को न केवल दूध की पैदावार बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है, बल्कि गायों और भैंसों जैसे दुधारू जानवरों में प्रजनन और प्रतिरक्षा को बढ़ाने के लिए भी डिज़ाइन किया गया है।

आईवीआरआई द्वारा विकसित पशु आहार इन मूल्यवान प्राणियों की महत्वपूर्ण पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करने में एक महत्वपूर्ण छलांग का प्रतिनिधित्व करता है। जबकि बाजार में पशु आहार के विभिन्न विकल्प मौजूद हैं, यह अत्याधुनिक उत्पाद दुधारू पशुओं की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप सावधानीपूर्वक चयनित फाइटोन्यूट्रिएंट्स के अपने अद्वितीय संयोजन के लिए जाना जाता है।
जैसा कि भारत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का 95वां स्थापना दिवस मना रहा है, यह क्रांतिकारी सफलता डेयरी फार्मिंग में एक नए युग का प्रतीक है।

आईवीआरआई के अभूतपूर्व पशु आहार को व्यापक रूप से अपनाने के साथ, भारतीय डेयरी उद्योग दूध उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और डेयरी किसानों के लिए एक स्थायी भविष्य सुरक्षित करने के लिए तैयार है। वैज्ञानिक सरलता और फार्मास्युटिकल विशेषज्ञता का अभिसरण किसानों, जानवरों और समग्र रूप से डेयरी क्षेत्र के लिए एक उज्जवल भविष्य की गारंटी देता है। खुदरा बाजार में इस गेम-चेंजिंग पशु आहार की आसन्न उपलब्धता डेयरी फार्मिंग में एक नई सुबह की शुरुआत करती है, जहां नवाचार और वैज्ञानिक प्रगति दूध उत्पादन के सार को फिर से परिभाषित करने के लिए हाथ मिलाते हैं।

आईवीआरआई टीम द्वारा कई शोध स्थलों पर किए गए व्यापक परीक्षणों ने इस पशु आहार की उल्लेखनीय प्रभावकारिता और परिवर्तनकारी क्षमता को प्रदर्शित किया है। प्रसिद्ध हर्बल दवा निर्माता, एआईएमआईएल फार्मास्यूटिकल्स (इंडिया) लिमिटेड के साथ सहयोग, इस परिवर्तनकारी उत्पाद की व्यावसायिक उपलब्धता सुनिश्चित करता है। पशुओं की भूख, प्रतिरोधक क्षमता और सामान्य स्वास्थ्य को बढ़ाकर, नया चारा पूरक पशुओं में दूध उत्पादन क्षमता और प्रजनन क्षमताओं को बढ़ाने का वादा करता है।

जून में दूध खरीद में लगातार वृद्धि देखी गई, कोई कमी की सूचना नहीं है

भारत के डेयरी क्षेत्र के लिए एक आशाजनक विकास में, देश में जून 2023 के महीने के दौरान दूध की खरीद में पर्याप्त वृद्धि देखी गई। मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री, परषोत्तम रूपाला के अनुसार, दूध की खरीद में साल-दर-साल 5.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई। पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष. मंत्री का बयान देश में दूध और दूध उत्पादों की संभावित कमी के बारे में चिंताओं के जवाब में था, उन्होंने जनता को आश्वासन दिया कि ऐसी कोई कमी सामने नहीं आई है।

हालांकि विभाग दूध की खरीद और बिक्री की कीमतों को विनियमित नहीं करता है, मंत्री ने स्पष्ट किया कि कीमतें सहकारी और निजी डेयरियों द्वारा उनकी उत्पादन लागत और बाजार की गतिशीलता को ध्यान में रखते हुए निर्धारित की जाती हैं। स्थिति अनुकूल प्रतीत होती है क्योंकि चारे का थोक मूल्य सूचकांक लगातार कम हो रहा है, मानसून के मौसम के मद्देनजर हरे चारे की उपलब्धता में सुधार हो रहा है।
वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान, देश ने प्रभावशाली 221.06 मिलियन मीट्रिक टन (एमएमटी) दूध उत्पादन दर्ज किया, जो भारतीय डेयरी उद्योग की अपार क्षमता को दर्शाता है। वर्तमान में, डेयरी सहकारी समितियों की संयुक्त प्रसंस्करण क्षमता 989.43 लाख लीटर प्रतिदिन है, जो बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए क्षेत्र की तैयारी को दर्शाता है।

भारत में दूध की स्थिति की निगरानी के लिए जिम्मेदार पशुपालन एवं डेयरी विभाग ने पुष्टि की कि दूध और दूध उत्पादों की आपूर्ति में कोई समस्या नहीं है। रूपाला ने आगे खुलासा किया कि प्रमुख डेयरी सहकारी समितियों की रिपोर्ट के आधार पर, स्किम्ड मिल्क पाउडर के स्टॉक में सकारात्मक रुझान दिखा, जो मई और जून 2023 के बीच 116,002 टन से बढ़कर 130,000 टन हो गया।

शीर्षक: तनाव प्रबंधन: दूध उत्पादकता बढ़ाने में एक प्रमुख कारक

परिचय:

दूध उत्पादकता को प्रभावित करने वाले कारकों पर हमारी चल रही श्रृंखला में, अब हम अपना ध्यान तनाव प्रबंधन पर केंद्रित करते हैं। तनाव का डेयरी पशुओं पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है, जिससे दूध उत्पादकता कम हो सकती है और पशु कल्याण प्रभावित हो सकता है। तनाव प्रबंधन के महत्व को पहचानते हुए, भारत में डेयरी कौशल उत्कृष्टता केंद्र (सीईडीएसआई) इस महत्वपूर्ण पहलू में किसानों को अपना समर्थन प्रदान करता है। इस ब्लॉग में, हम तनाव और दूध उत्पादकता के बीच संबंधों का पता लगाएंगे, तनाव के नकारात्मक प्रभावों को उजागर करेंगे, तनाव को खत्म करने के लिए प्रभावी रणनीतियों पर चर्चा करेंगे, और बेहतर डेयरी फार्म उत्पादकता के लिए तनाव प्रबंधन प्रथाओं को बढ़ावा देने में सीईडीएसआई की भूमिका पर जोर देंगे।

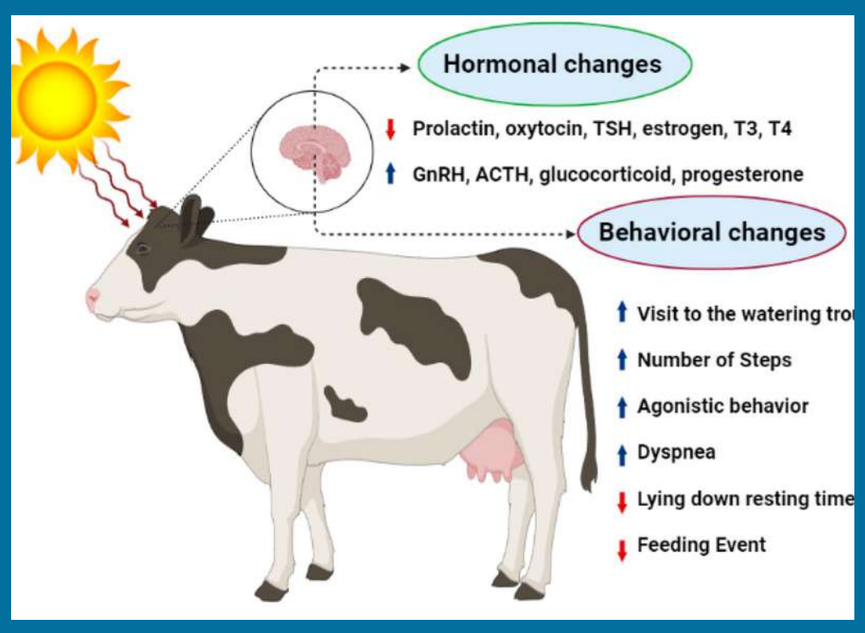

तनाव और उत्पादकता के बीच संबंध:

भारतीय डेयरी उद्योग में, तनाव एक प्रचलित मुद्दा है जो दूध उत्पादकता को प्रभावित करता है। गर्मी, अपर्याप्त पोषण, खराब आवास की स्थिति और अनुचित हैंडलिंग तकनीक जैसे तनाव डेयरी पशुओं में तनाव के स्तर को बढ़ाने में योगदान करते हैं। ये कारक कोर्टिसोल जैसे तनाव हार्मोन की रिहाई को ट्रिगर करते हैं, जो पशु के शारीरिक संतुलन को बाधित करता है और दूध उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

अध्ययनों से पता चला है कि तनावग्रस्त गायों के दूध की पैदावार में 10-15% तक की कमी हो सकती है। भारत जैसे देश में, जहां दूध उत्पादन कृषि अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, तनाव और उत्पादकता पर इसके प्रभाव को संबोधित करना महत्वपूर्ण हो जाता है।

बढ़ी हुई उत्पादकता के लिए तनाव उन्मूलन:

आरामदायक आवास: उचित फर्श, प्रति जानवर पर्याप्त जगह और आरामदायक बिस्तर के साथ अच्छी तरह हवादार आश्रय प्रदान करने से तनाव कम करने और उत्पादकता में सुधार करने में मदद मिलती है।

पोषण प्रबंधन: जानवरों की विशिष्ट पोषण संबंधी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए संतुलित और उचित आहार सुनिश्चित करना, उनके समग्र कल्याण को बढ़ावा देता है और तनाव के स्तर को कम करता है।

गर्मी के तनाव को कम करना: गर्मी के महीनों के दौरान गर्मी के तनाव से निपटने के लिए स्प्रिंकलर सिस्टम, पंखे और छाया संरचनाओं जैसे उपायों को लागू करने से तनाव काफी कम हो जाता है और दूध उत्पादन में सुधार होता है।

उचित रख-रखाव और प्रशिक्षण: कम तनाव से निपटने की तकनीकों का उपयोग करना, अचानक तेज़ शोर या गड़बड़ी से बचना, और जानवरों और फार्म कर्मचारियों को उचित प्रशिक्षण प्रदान करना, रख-रखाव और नियमित प्रक्रियाओं के दौरान तनाव को कम करने में मदद करता है।

रोग की रोकथाम और स्वास्थ्य प्रबंधन: नियमित पशु चिकित्सा जांच, समय पर टीकाकरण और प्रभावी रोग रोकथाम रणनीतियाँ जानवरों में तनाव के स्तर को कम करने में योगदान करती हैं।

समाजीकरण और व्यायाम: जानवरों के बीच सामाजिक संपर्क को प्रोत्साहित करना, पर्याप्त व्यायाम के अवसर प्रदान करना और सकारात्मक झुंड गतिशीलता को बढ़ावा देना तनाव को कम करने में मदद करता है और समग्र पशु कल्याण को बढ़ावा देता है।

तनाव प्रबंधन में सीईडीएसआई का समर्थन:

सीईडीएसआई दूध उत्पादकता और पशु कल्याण को अनुकूलित करने में तनाव प्रबंधन की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करता है। संगठन विभिन्न पहलों और कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों को अपना समर्थन प्रदान करता है।

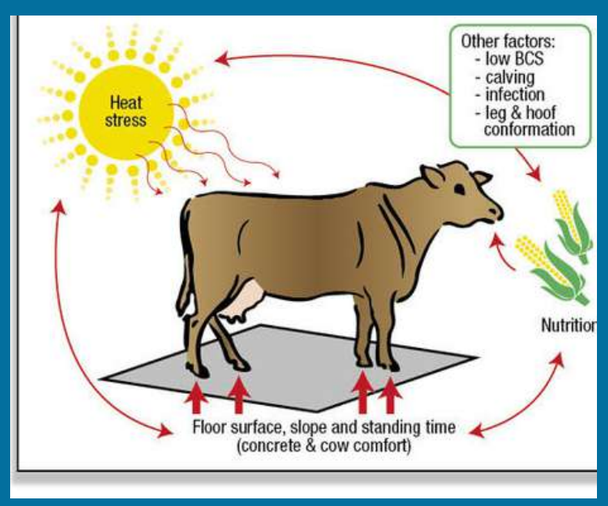

सीईडीएसआई भारतीय संदर्भ के लिए विशिष्ट तनाव प्रबंधन तकनीकों पर ध्यान केंद्रित करते हुए प्रशिक्षण सत्र और कार्यशालाएं आयोजित करता है। किसानों को तनाव संकेतकों की पहचान करने, तनाव कम करने की रणनीतियों को लागू करने और डेयरी पशुओं के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के बारे में शिक्षित किया जाता है।

तनाव के नकारात्मक प्रभाव:

तनाव का दूध उत्पादकता और डेयरी पशुओं के समग्र स्वास्थ्य पर कई नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। दूध की कम पैदावार के अलावा, तनावग्रस्त गायें स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं, जिनमें चयापचय संबंधी विकार, स्तनदाह और प्रजनन संबंधी समस्याएं शामिल हैं। लगातार तनाव से प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर हो जाती है, जिससे पशुओं में संक्रामक रोगों का खतरा बढ़ जाता है, जिससे किसानों को अतिरिक्त आर्थिक नुकसान होता है।

इसके अलावा, तनाव जानवरों के व्यवहार और स्वभाव को प्रभावित करता है। तनावग्रस्त गायें झुंड के अन्य सदस्यों के प्रति आक्रामक व्यवहार प्रदर्शित कर सकती हैं, जिससे समूह के भीतर चोटें और व्यवधान पैदा हो सकते हैं। इससे चारे का सेवन कम हो सकता है, जिससे दूध उत्पादन पर और असर पड़ेगा।

सीईडीएसआई भारतीय डेयरी क्षेत्र के अनुरूप तनाव प्रबंधन दिशानिर्देश विकसित करने के लिए पशु चिकित्सा विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और उद्योग पेशेवरों के साथ सहयोग करता है। ये दिशानिर्देश किसानों को तनाव को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने और दूध उत्पादकता में सुधार करने में मदद करने के लिए व्यावहारिक अंतर्दृष्टि और सिफारिशें प्रदान करते हैं।

इसके अलावा, सीईडीएसआई तनाव संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों और नवीन प्रथाओं के उपयोग को बढ़ावा देता है। इसमें सटीक डेयरी फार्मिंग तकनीकों को अपनाना शामिल है जो जानवरों के व्यवहार, फ़ीड सेवन और स्वास्थ्य मापदंडों की निगरानी के लिए सेंसर, डेटा एनालिटिक्स और स्वचालन का उपयोग करते हैं। ये प्रौद्योगिकियाँ किसानों को तनाव के शुरुआती लक्षणों का पता लगाने, समय पर हस्तक्षेप और बेहतर प्रबंधन निर्णय लेने में मदद करती हैं।

सीईडीएसआई ज्ञान विनिमय प्लेटफार्मों की सुविधा भी प्रदान करता है, जहां किसान तनाव प्रबंधन से संबंधित अपने अनुभव, चुनौतियां और सफलता की कहानियां साझा कर सकते हैं। ये प्लेटफ़ॉर्म मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं और डेयरी किसानों के बीच सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने को प्रोत्साहित करते हैं।

सीईडीएसआई भारतीय डेयरी क्षेत्र के अनुरूप तनाव प्रबंधन दिशानिर्देश विकसित करने के लिए पशु चिकित्सा विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और उद्योग पेशेवरों के साथ सहयोग करता है। ये दिशानिर्देश किसानों को तनाव को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने और दूध उत्पादकता में सुधार करने में मदद करने के लिए व्यावहारिक अंतर्दृष्टि और सिफारिशें प्रदान करते हैं।

इसके अलावा, सीईडीएसआई तनाव संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों और नवीन प्रथाओं के उपयोग को बढ़ावा देता है। इसमें सटीक डेयरी फार्मिंग तकनीकों को अपनाना शामिल है जो जानवरों के व्यवहार, फ़ीड सेवन और स्वास्थ्य मापदंडों की निगरानी के लिए सेंसर, डेटा एनालिटिक्स और स्वचालन का उपयोग करते हैं। ये प्रौद्योगिकियाँ किसानों को तनाव के शुरुआती लक्षणों का पता लगाने, समय पर हस्तक्षेप और बेहतर प्रबंधन निर्णय लेने में मदद करती हैं।

सीईडीएसआई ज्ञान विनिमय प्लेटफार्मों की सुविधा भी प्रदान करता है, जहां किसान तनाव प्रबंधन से संबंधित अपने अनुभव, चुनौतियां और सफलता की कहानियां साझा कर सकते हैं। ये प्लेटफ़ॉर्म मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं और डेयरी किसानों के बीच सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने को प्रोत्साहित करते हैं।

सूचना

सीईडीएसआई द्वारा राजस्थान में प्राथमिक दुग्ध उत्पादकों के लिए कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम!

सीईडीएसआई राजस्थान में प्राथमिक दूध उत्पादकों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से एक विशेष कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम की घोषणा करते हुए रोमांचित है। संबद्ध डेयरी और दूध उत्पादक संघों के पास अपने सदस्यों को संपूर्ण डेयरी खेती और पशुपालन प्रथाओं को कवर करने वाला व्यापक 3-दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान करने का एक अनूठा अवसर है। कार्यक्रम में मवेशियों की नस्ल, चारा प्रबंधन, पशु स्वास्थ्य, प्रजनन, दूध की गुणवत्ता और फार्म प्रबंधन जैसे आवश्यक विषयों को शामिल किया जाएगा। प्रतिभागियों को अपने डेयरी संचालन को बढ़ाने के लिए गहन ज्ञान और व्यावहारिक कौशल प्राप्त होंगे।

इसके अलावा, दूध उत्पादकों का मूल्यांकन किया जाएगा और कार्यक्रम के सफल समापन पर उन्हें औपचारिक प्रमाणन प्राप्त होगा। यह प्रमाणीकरण एक मान्यता प्राप्त प्रमाण पत्र के रूप में काम करेगा, जिससे उन्हें अपने डेयरी व्यवसाय का विस्तार करने और हितधारकों के बीच विश्वास बनाने में सहायता मिलेगी।

सीईडीएसआई कार्यक्रम का खर्च वहन करेगा, जबकि संबद्ध डेयरी या निर्माता संघ प्रशिक्षण स्थल, प्रतिभागियों और प्रशिक्षण सहायता की व्यवस्था करेंगे। प्रत्येक बैच अधिकतम 25-30 किसानों को समायोजित कर सकता है, जिससे व्यक्तिगत ध्यान और केंद्रित शिक्षा सुनिश्चित होती है। बड़ी संख्या में दूध उत्पादकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए दो बैचों का आयोजन किया जा सकता है। यदि आपका डेयरी या उत्पादक संघ इस कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से अपने संबद्ध दूध उत्पादकों के उत्थान और सशक्तिकरण में रुचि रखता है, तो इस अवसर को न चूकें!

हम कौन हैं?

कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के तहत भारतीय कृषि कौशल परिषद (ASCI) के तत्वावधान में काम करने वाली एक स्वायत्त संस्था "भारत में डेयरी कौशल के लिए उत्कृष्टता केंद्र (CEDSI)", किसानों की आजीविका के सशक्तिकरण और बेहतरी में मदद करने के लिए, वेतनभोगी कर्मचारी, और डेयरी मूल्य श्रृंखला में अन्य हितधारक।

सीईडीएसआई सदस्यता उद्योग के नेताओं, नीति निर्माताओं, विकास चिकित्सकों, डेयरी वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, छात्रों और किसानों को डेयरी उद्योग के लिए आसन्न महत्व के मुद्दों पर बहस और चर्चा करने के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करेगी।

CEDSI : रिविविंग स्किल्स एंड जनरेटिंग लाइवलीहुड

किसानों/छात्रों/उद्यमियों के लिए कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- डेयरी किसान / उद्यमी
- डेयरी फार्म पर्यवेक्षक
- डेयरी कार्यकर्ता
- पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता
- कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन
- पशु चिकित्सा क्षेत्र सहायक
- पशु चिकित्सा नैदानिक सहायक
- बछड़ा पालन
- कृषि उपकरण तकनीशियन
- डेयरी फार्म अर्थशास्त्र और प्रबंधन
- उद्योग संरेखित प्रमाणन कार्यक्रम (बेरोजगार युवा और छात्र)

एफपीओ उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम

- उत्पाद प्रौद्योगिकी और प्रक्रियाओं पर एफपीओ सदस्य अभिविन्यास।
- एफपीओ मार्केट लिंकेज
- एफपीओ शासन
- एफपीओ लेखा

डेयरी कॉरपोरेट्स और सहकारी समितियों के लिए प्रमुख कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- चिलिंग प्लांट तकनीशियन
- बल्क मिल्क कूलर ऑपरेटर
- ग्राम स्तरीय दुग्ध संग्रह केन्द्र पर्यवेक्षक
- दूध परीक्षक
- ग्रीन हाउस गैसों का शमन
- दूध की गुणवत्ता आश्वासन
- मिल्क डिलीवरी बॉय
- दूध खरीद और इनपुट पर्यवेक्षक
- डेयरी उद्योग में अपशिष्ट प्रबंधन
- चारा और चारा प्रबंधन
- स्वच्छ दूध उत्पादन
- निर्णय समर्थन प्रणाली / डेटा विश्लेषिकी

सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर डेरी स्किल्स इन इंडिया